प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

एक काम करो जो आपको लगता है कि आप नहीं कर सकते। असफल रहने पर पुनः प्रयास करो। दूसरी बार ज्यादा बेहतर करो।
-ओपरा विन्फ्रे

अमेरिकी टीवी प्रस्तोता

उत्तर प्रदेश में सपा-बसपा के गठबंधन में पड़ी दरार की सूचना बताती है कि ठोस जमीनी आधार के बजाय तात्कालिक चुनावी लाभ के लिए बने गठजोड़ अंततः अस्थायी ही होते हैं।

गठबंधन में दरार?

जब नीति, सोच और वैचारिकता के साझा के बजाय तात्कालिक चुनावी लाभ को ध्यान में रखकर राजनीतिक गठबंधन किए जाते हैं, तब उसका वही हश्र होता है, जैसा उत्तर प्रदेश में दिख रहा है, जहां सपा और बसपा के बीच हुए महागठबंधन में दरार पड़ने के संकेत हैं। गठबंधन के खत्म होने का औपचारिक एलान तो अभी नहीं हुआ है, पर बसपा की समीक्षा बैठक में मायावती ने गठबंधन के प्रयोग की विफलता पर जैसी निराशा और नाखुशी जताई, वह इसका भविष्य बताने के लिए काफी है। उनका कहना था कि बसपा का वोट सपा में जिस तरह स्थानांतरित हुआ, सपा का वोट उस तरह बसपा में नहीं आया और सपा यादव मतों में हुए बंटवारे तक को नहीं रोक पाई। जाटों का वोट बसपा प्रत्याशियों को न मिलने की बात कहकर उन्होंने रालोद के प्रति भी अपनी नाखुशी जताई। बसपा सुप्रीमो ने सूबे की ग्यारह विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनावों में अकेले लड़ने की जो बात कही है, वह भी चौंकाने वाली है, क्योंकि बसपा आम तौर पर उपचुनाव नहीं लड़ती। लोकसभा के उपचुनाव में भाजपा के खिलाफ सपा-बसपा गठबंधन के सफल प्रयोग से उत्साहित होकर अखिलेश और मायावती ने लोकसभा चुनाव में इसे दोहराने का फैसला तो कर लिया, पर वे भूल गए भिन्न राजनीतिक धरातलों पर खड़ी दो क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी पार्टियों के बीच गठजोड़ स्वाभाविक नहीं हो सकता। बसपा ने 38, सपा ने 37 और रालोद ने तीन सीटों पर चुनाव लड़ा था और अमेठी व रायबरेली की सीटें कांग्रेस के लिए छोड़ दी थीं। अखिलेश ने तब कहा था कि यह गठबंधन 2022 के विधानसभा चुनाव तक चलेगा। सिर्फ यही नहीं कि भाजपा को रोकने के एकमात्र लक्ष्य पर बने इस गठबंधन पर सपा-बसपा के नेता, कार्यकर्ता सहमत नहीं थे, बल्कि इसमें गठबंधन धर्म का पालन भी नहीं किया गया। बेशक बसपा नाराज है, लेकिन वह शून्य से दस सीट पर पहुंच गई है, जबकि सपा न सिर्फ पांच सीट पर बनी रही, बल्कि कन्नौज, बदायूं और फिरोजाबाद जैसे अपने गढ़ में उसकी हार हुई। यानी सीटों के चयन में पारदर्शिता नहीं बरती गई और बसपा के वोट भी सपा में नहीं गए। लेकिन जमीनी आधार के बगैर बने हवाई गठबंधनों का यही हश्र होता है। उत्तर प्रदेश में पिछले विधानसभा चुनाव के समय हमने सपा और कांग्रेस का गठबंधन बनते और चुनाव के बाद उसे टूटते हुए देखा ही था।

दक्षिण में भाजपा की परीक्षा

लोकसभा चुनाव में कर्नाटक और तेलंगाना में शानदार प्रदर्शन करने के बावजूद भाजपा उस केरल में अभी तक सफल नहीं हो पाई है, जहां संघ की मजबूत उपस्थिति है।

जी श्रीदत्तन, वरिष्ठ पत्रकार

वाईएसआर कांग्रेस के प्रमुख जगन मोहन रेड्डी ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ले ली है। आंध्र के विभाजन के बाद वह दूसरे मुख्यमंत्री बने हैं। वह ऐसे समय में राज्य के मुख्यमंत्री बने हैं, जब उत्तर, पूर्व, पूर्वोत्तर, पश्चिम और मध्य भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लहर चल रही है, लेकिन दक्षिण भारत मोटे तौर पर उस लहर से अछूता है। दक्षिण भारत में मात्र एक राज्य कर्नाटक है, जहां भाजपा ने जद (एस) और कांग्रेस के लिए मात्र दो सीट ही छोड़ी।

हालांकि तेलंगाना में भाजपा चार लोकसभा सीटों पर कब्जा जमा कर भारी फायदे में रही, लेकिन वहां सत्तारूढ़ तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) लोकसभा की नौ सीटें जीतकर प्रमुख पार्टी बनी है। भाजपा के नेतृत्व में राजग को आंध्र प्रदेश और केरल में लोकसभा की एक भी सीट नहीं मिली, जबकि अन्नाद्रमुक से गठबंधन के कारण तमिलनाडु में एक सीट मिली। यह तथ्य है कि भाजपा दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में अपनी मौजूदगी नहीं जता पाई है।

आंध्र प्रदेश में भाजपा संगठनात्मक कमजोरी के कारण अपने पांव नहीं पसार सकी। वह इस राज्य में उत्तर भारतीय पार्टी होने की अपनी छवि को नहीं तोड़ पाई, जहां मजबूत क्षेत्रीय भावनाओं ने राजनीतिक आंदोलनों को हवा दी है। अभिनेता से राजनेता बने एन टी रामाराव ने तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) का गठन ही 'उत्तर भारत की भ्रष्ट पार्टी' कांग्रेस को राज्य से उखाड़ फेंकने के लिए किया था। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दक्षिण में एकमात्र पार्टी जो बड़ी जीत हासिल करने में सक्षम रही, वह थी तेदेपा। हालांकि, बाद में वाईएस राजशेखर रेड्डी के नेतृत्व में कांग्रेस ऐतिहासिक जीत दर्ज करने में कामयाब रही, पर आंध्र प्रदेश के विभाजन के बाद उसका अस्तित्व खत्म हो गया। भाजपा हमेशा तेदेपा के सहारे वहां कुछ सीटें जीतती रही। इस बार भाजपा ने वहां गठबंधन नहीं किया था, इसलिए उसका वोट प्रतिशत घटकर 0.96 फीसदी रह गया।

तमिलनाडु की राजनीति में भाजपा एवं कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियां सीमांत भूमिकाएं ही निभाती हैं, जहां दो द्रविड़ पार्टियां-अन्नाद्रमुक और द्रमुक लगातार मुख्य भूमिका में रहती हैं। हालांकि इस बार भाजपा ने प्रमुख साझेदार के रूप में अन्नाद्रमुक और छह अन्य जाति आधारित पार्टियों के साथ गठजोड़ किया था, लेकिन द्रमुक की अगुवाई में बने गठबंधन ने राज्य में भाजपा की दाल नहीं गलने दी। 39 लोकसभा सीटों में से द्रमुक ने 23 सीटें और कांग्रेस ने आठ सीटें जीतीं। भाजपा से अलग रहकर अन्नाद्रमुक ने 2014 के लोकसभा चुनाव में भारी सफलता हासिल की थी, वह इस बार मात्र एक सीट जीत पाई। भाजपा का वोट शेयर जो 2014 में 5.56 फीसदी था, वह इस बार घटकर मात्र 3.66 फीसदी रह गया।

तमिल अभिमान और हिंदी विरोधी और उत्तर भारत विरोधी भावनाओं ने ही द्रविड़ राजनीति की आधारशिला रखी। तमिलनाडु की राजनीति में भाजपा अपने लिए कोई जगह नहीं बना पाई है। अगर उसे अपना विस्तार करना है, तो ताकतवर क्षेत्रीय नेता तैयार करने होंगे, जो मतदाताओं के सामने एक नई कहानी पेश कर सकें। केरल में संघ के मजबूत संगठन के बावजूद भाजपा क्यों नहीं बढ़ पा रही, इस सवाल का जवाब देते हुए संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि पार्टी एक दुर्जेय नेतृत्व का निर्माण करने में सफल नहीं हुई, जो अवसरों का लाभ उठा सके।

केरल में भाजपा जिस स्थिति का सामना कर रही है, उसका यह सटीक विश्लेषण है। पार्टी मोदी सरकार की उपलब्धियों को लोगों तक पहुंचाने में विफल रही है। राष्ट्रीय स्तर पर बेहद लोकप्रिय होने के बावजूद वह राज्य के सबसे कम लोकप्रिय नेताओं में से एक हैं। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के विपरीत केरल संघ परिवार के लिए उर्वर भूमि रहा है। राज्य में संघ परिवार की अधिकतम संख्या में शाखाएं हैं। फिर भी भाजपा को राज्य में एक बड़ी चुनावी जीत अब तक नहीं मिली है। इस बार पार्टी के वोट प्रतिशत में मामूली इजाफा हुआ है।

व्यापक रूप से देखा गया कि भाजपा को अंततः सबरीमाला मुद्दे के रूप में अयोध्या जैसा मौका मिल गया, लेकिन अप्रत्याशित हिंदू लामबंदी से पार्टी फायदा उठाने में विफल रही। इस लामबंदी का सबसे ज्यादा फायदा कांग्रेस की अगुआई में यूडीएफ को मिला। चूंकि भाजपा जीतने वाली पार्टी के रूप में मतदाताओं के बीच अपनी छवि नहीं बना सकी, तो हिंदुओं ने देखा कि कांग्रेस ही माकपा के नेतृत्व वाले एलडीएफ को हरा सकती है, जो सबरीमाला विवाद और अन्य मुद्दों के कारण भारी सत्ता विरोधी रुझान का सामना कर रहा था।

केरल की जनसांख्यिकी भी भाजपा के लिए चुनौती पेश करती है। 2011 की जनगणना के मुताबिक, वहां 56 फीसदी हिंदू, 26 फीसदी मुस्लिम और 18 फीसदी ईसाई हैं। वहां की जनसांख्यिकी एवं सामाजिक समीकरण भी भाजपा को तीसरे विकल्प के रूप में उभरने नहीं देते। जब भी भाजपा की संभावनाएं उज्ज्वल होती हैं, विरोधी दल उसे हराने के लिए क्रॉस वोटिंग करते हैं।

भाजपा को अपना आधार बढ़ाने के लिए अल्पसंख्यकों का विश्वास जीतना पड़ेगा। कुछ ईसाई समूहों ने पार्टी और मोदी के प्रति अपना झुकाव दिखाया है। ईसाइयों का भरोसा जीतने के लिए भाजपा ने नौकरशाह से राजनेता बने अल्फोंस कन्नमथनम को नियुक्त किया और दशकों से पार्टी के लिए काम कर रहे अन्य ईसाई नेताओं को छोड़ दिया। लेकिन वह पार्टी के लिए बोझ बन गए, क्योंकि वह पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता के भरोसे को प्रेरित नहीं कर सके। यहां तक कि वह अपने समुदाय का समर्थन भी पार्टी के लिए नहीं अर्जित कर सके। चुनाव में उनकी जमानत भी जब्त हो गई। पार्टी सोनिया गांधी के पूर्व सहयोगी टॉम वडक्कन (जो रोमन कैथोलिक हैं) को ले आई। लेकिन वडक्कन को भी स्थानीय समर्थन नहीं है।

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'सबका साथ, सबका विकास' के साथ 'सबका विश्वास' भी जोड़ा है। दक्षिण के इन राज्यों में पार्टी को जीवंत बनाने के लिए हो सकता है कि भाजपा इस मंत्र को कार्यरूप दे।

अंतर्ध्वनि

>> ईमान मर्सल

घर में रहते हुए भी कोई कवि निर्वासन झेल सकता है

कुछ लोग कविता को विरोध की आवाज कहते हैं। यह ऐसी बात है, जिससे मैं अपने अब तक के जीवन में जुड़ाव नहीं महसूस कर पाती। शायद ऐसा उस संस्कृति के कारण है, जहां से मैं आती हूं। औपनिवेशिक युग की समाप्ति के बाद बहुत बड़े राजनीतिक सवाल खड़े हुए थे, उन पर बेहद बौद्धिक-विचारधारात्मक बहसें चलीं, और उसके बाद अरब साहित्यिक पटल पर फलस्तीनी त्रासदी ने बहुत बड़ी जगह घेर ली। उस दौर से महान कवि निकलकर आए, जैसे कि महमूद दरवेश, फिर भी मेरा मानना है कि उनकी कविता में काव्यशास्त्र का जो सुंदर प्रयोग है, वह प्रतिवाद या विरोध के इस तत्व से पूर्णतः स्वतंत्र है। प्रामाणिक कला, अपनी शैक्षणिक भूमिका अदा करती हुई एक अप्रत्यक्ष राजनीतिक धारा हो सकती है। जैसा कि बादू ने कहा है, कला शैक्षणिक होती है, क्योंकि यह सत्य का संधान करती है और शिक्षा भी इससे अलग कुछ नहीं करती : यानी ज्ञान की विभिन्न विधाओं का संयोजन इस तरह करना कि सत्य उसमें एक छोटा-सा छेद कर सके। कुछ कवियों को निर्वासन मिलता है, कई विस्थापित हो जाते हैं, लेकिन कई ऐसे कवि होते हैं, जो बिना घर-बार, देश-दुआर छोड़े ही एलियनेशन, विस्थापन या तमाम राजनीतिक संघर्ष झेल लेते हैं। इसीलिए मैं निर्वासन शब्द का इस्तेमाल करने से बचती हूं, क्योंकि इस शब्द के सारे अर्थ समझे बिना इसका गलत इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जाता है। मेरी पीढ़ी के युवा कवि, फिल्मकार और बुद्धिजीवी, हम सब इस एलियनेशन को बहुत शिद्दत से महसूस कर रहे थे और इसी ने हमें इस इच्छा से भर दिया कि हम अरब संस्कृति के सौंदर्यशास्त्र और ऐतिहासिक विचारधाराओं से परे हट जाएं, कविता में तो खासकर। इस तरह गद्य कविता हमारे लिए मुख्यधारा के महा-आख्यानों का निषेध थी।

-मिस्र की मशहूर अरबी कवयित्री।

मंजिलें और भी हैं

>> कपिल सहगल

गरीबी में मिली मदद से जगी सहयोग की ललक

मैं उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद का रहने वाला हूं। मेरा बचपन बेहद गरीबी में बीता। मेरे पिताजी सीए के पद से कार्यमुक्त थे। परिवार में 12 सदस्य थे। पिताजी अक्सर बीमार रहते थे। गरीबी का आलम यह था कि कभी-कभार हमें भूखे सो जाना पड़ता था। मैं पढ़ाई करना चाहता था, लेकिन इंटरमीडियट की पढ़ाई के लिए मेरे पास 20 रुपये तक नहीं थे। मैंने कई रिश्तेदारों से मदद मांगी। हालांकि मेरे रिश्तेदार हमसे काफी धनवान थे, लेकिन बुरे वक्त में कोई मेरे काम नहीं आया। फिर मेरे पिताजी के एक मित्र ने मेरी मदद की, तब जाकर मैं पढ़ पाया।

उस घटना का मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा और मैने ठान लिया कि जीवन में कुछ बन पाया, तो किसी भी जरूरतमंद को कभी मदद के लिए मना नहीं करूंगा। इंटरमीडिएट पास करने के बाद घर को आर्थिक सहयोग पहुंचाने के उद्देश्य से मैं सब्जी बेचने लगा। लेकिन उससे इतनी आमदनी नहीं होती थी कि मैं घर का खर्च संभालने के बाद दूसरों की मदद कर सकूं। एक दिन मेरे एक परिचित व्यक्ति ने मुझसे कहा, पढ़े-लिखे होकर सब्जी बेचते हो, नौकरी क्यों नहीं कर लेते? मैंने उनसे नौकरी न मिलने की बात कही। इस पर उन्होंने मेरी मदद की और मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में क्लर्क हो गया। कुछ दिन बाद मुझे इलाहाबाद उच्च न्यायालय में सेक्शन ऑफिसर की नौकरी मिल गई। तब तक मैं इस स्थिति में आ चुका था कि दूसरों की मदद कर सकूं।

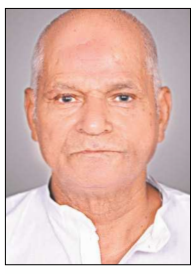

कई बार तो ऐसा होता है कि मेरी और पत्नी की पेंशन जरूरतमंदों की मदद में ही खर्च हो जाती है।

1972 से मैंने जरूरतमंद छात्रों की फीस, कॉपी-किताब जैसे खर्चे में मदद करनी शुरू कर दी। साथ ही बीमार लोगों के इलाज में भी सहयोग करने लगा। इसके बाद गरीब परिवार की लड़कियों की शादियां अपने खर्चे पर करवाने लगा। मेरे इस काम में मेरी पत्नी ने, जो अध्यापिका थीं, हर कदम पर मेरा साथ दिया। कई बार तो ऐसा होता है कि मेरी और पत्नी की पेंशन मदद में ही खर्च हो जाती है। चूंकि किसी भी लड़की के विवाह जैसे खर्च मैं अकेले उठा पाने में असमर्थ था, इसलिए मैंने समाज के अन्य लोगों से भी मदद लेनी शुरू की। इसके बाद जनप्रतिनिधियों के अलावा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, अधिकारी, कर्मचारी साथ ही मेरे कई मित्रों और व्यापारियों ने मुझे सहयोग देना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप मैंने अब तक 104 गरीब परिवार की लड़कियों की शादी करवाई है। मैं अक्सर देखता था कि भूख-प्यास से तड़पते पक्षी अक्सर घरों के आसपास मंडराते थे, लेकिन कुछ न मिलने पर वापस उड़ जाते थे। मैंने उनके लिए दाना-पानी का इंतजाम किया। शुरू में छत पर पक्षी नहीं आते थे, लेकिन जब प्रतिदिन वहां दाना-पानी मिलने लगा तो, सैकड़ों पक्षी आने लगे। कई बार तो ऐसा भी हुआ है कि, छत पर खाद्य पदार्थ पहुंचाने में देर हो गई, लेकिन जब ऊपर गया तो पक्षियों को इंतजार करते पाया। मेरे घर की दूसरी मंजिल की छत उनके लिए ही है, जहां उन्हें पानी और चावल, बाजरा, भिगोया गेहूं व रोटी के टुकड़े हर वक्त मिलते हैं। यह काम मैं स्वयं करता हूं, लेकिन मेरी अनुपस्थिति में इसका जिम्मा मेरी बहुएं संभालती हैं। मेरा मानना है कि अपनी दुनिया तक सिमटते जा रहे समाज में एक दूसरे की मदद बहुत जरूरी है। दूसरों का सहयोग कर मुझे जो खुशी मिलती है, उसी की बदौलत मैं स्वस्थ हूं, मन प्रफुल्लित रहता है, रात को अच्छी नींद आती है। आराम की जिंदगी जी रहा हूं, और क्या चाहिए!

खत्म होते बाग-बगीचे

रोज बढ़ रही गर्मी से बचने का कोई उपाय हमारी चिंता में नहीं है। नदी-नाले सूख रहे हैं। हवा की तपन को नियंत्रित करने वाले बड़े-बड़े बाग-बगीचे और झाड़ियों को हम निर्दयतापूर्वक समाप्त करते जा रहे हैं।

सुभाष चंद्र कुशवाहा

गर्मी बढ़ रही है और धरती तप रही है। लू के थपेड़े हमें घरों में कैद होने को विवश कर रहे हैं। यह जानलेवा गर्मी गरीबों के लिए सबसे ज्यादा कष्टदायी है, क्योंकि उन्हें तो काम के लिए हर हाल में घर से बाहर निकलना ही है। उनके सुस्ताने के लिए बाग-बगीचे नहीं रहे। पशु-पक्षी की परवाह हम कम ही करते रहे हैं, अब मनुष्य की भी परवाह नहीं करते। रोज बढ़ रही गर्मी से बचने का कोई उपाय भी हमारी चिंता में नहीं है।

नदी-नाले सूख रहे हैं। हवा की तपन को नियंत्रित करने वाले बड़े-बड़े बाग-बगीचे और झाड़ियों को हमने निर्दयतापूर्वक समाप्त कर दिया है। ताल-तलैयों के प्रति जो नीति रही, उससे अब न गांवों में बारहों महीने पानी वाले तालाब बचे हैं और न झीलें बची हैं। शहरों में सीमेंट के जो जंगल खड़े किए गए, उसने हरियाली खत्म कर दी। बड़े-बड़े कॉलोनाइजरों ने बेरहमी से बागों, तालाबों और झीलों को खत्म किया।

सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद हर शहर में तालाबों को पाटकर और बागों को काटकर कॉलोनियां विकसित की गईं। पहले ज्यादातर बाग सामंतों और राजा-रजवाड़ों ने लगवाए थे। सारी जमीन पर कब्जा उन्हीं का था, इसलिए बड़े-बड़े बाग लगाने की क्षमता भी उन्हीं के पास थी। लखनऊ, बंगलूरू, देहरादून, जयपुर आदि बागों के शहर थे। लखनऊ के ज्यादातर इलाकों के नाम बागों के नाम पर रखे गए थे। इलाहाबाद, रांची आदि बागों से आच्छादित शहर थे।

बागों से तापमान का कैसा रिश्ता होता है, इसे समझने के लिए हमें देहरादून के वर्तमान को देखना होगा। कभी पूरा देहरादून शहर बागों से ढका रहता था। लीची के मशहूर बाग और हरे-भरे पेड़ शहर की शोभा बढ़ाते थे। बीती सदी के साठ के दशक तक बने देहरादून के मकानों में पंखों का प्रावधान नहीं होता था। ढाई बीघे के प्लॉट में एक छोटा मकान बना होता, शेष में बाग और फूल-पौधे होते थे। गर्मियों में एक-दो दिन गर्मी पड़ती और अगले दिन बारिश से मौसम सुहाना हो जाता। आज स्थिति बदल चुकी है। पूरा राजपुर रोड शॉपिंग कॉम्प्लेक्स से भरा पड़ा है। पेड़ गायब हो चुके हैं और दिन का तापमान 45 डिग्री सेल्सियस पार कर रहा है। आखिर हमारे विकास मॉडल में कुछ तो खोट है, जो प्रकृति को नष्ट कर धरती का तापमान बढ़ा रहा है। धरती पर जीव का अस्तित्व इसके ठंडा होने से ही संभव हुआ था। अब अगर धरती फिर तपती जा रही है, तो निश्चय ही धरती से जीवों के खत्म होने का समय करीब है।

वाहनों की बढ़ती संख्या और घरों में लगे एसी भी गर्मी बढ़ा रहे हैं। हरे-भरे बागों और जंगलों में गर्मी को नियंत्रित करने और मानसून को बरसने के लिए बाध्य करने की जो क्षमता होती थी, वह अब नहीं रही। बगीचों से गुजरती गर्म हवा, पेड़ों के पत्तों को छूकर ठंडी हो जाती थी। पत्तियां तापमान को नियंत्रित करती थीं। आज हम धरती को बेपर्दा करते जा रहे हैं। नंगी धरती की हवा रूखी-सूखी हो गई है। गर्मी को नियंत्रित करने के लिए बाग और तालाबों का जो महत्व समाज में पहले था, हमने उसे नकार दिया। हमारे लोकगीतों में भी बागों और तालाबों का काफी जिक्र हुआ है।

गर्मी बढ़ाने और बाग-बगीचों को नष्ट करने में हमारी तथाकथित विकास नीतियां और कॉरपोरेट की धनलिप्सा जिम्मेदार है, क्योंकि प्रकृति का भोग वही अधिक करता है। उसने अपने लिए हर चीज वातानुकूलित बना ली है। जब तक इन नीतियों की समीक्षा नहीं होगी, तब तक गर्मी बढ़ेगी और धरती झुलसती रहेगी।

खुली खिड़की

रेअर अर्थ खनिजों का उत्पादन

चीन और अमेरिका के बीच जारी व्यापार युद्ध के बीच रेअर अर्थ (विरल मृदा) खनिज चर्चा में हैं। इन धातुओं का इस्तेमाल इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाने में होता है। 2018 में आई रिपोर्ट के मुताबिक रेअर अर्थ खनिज के उत्पादन में चीन सबसे आगे है।

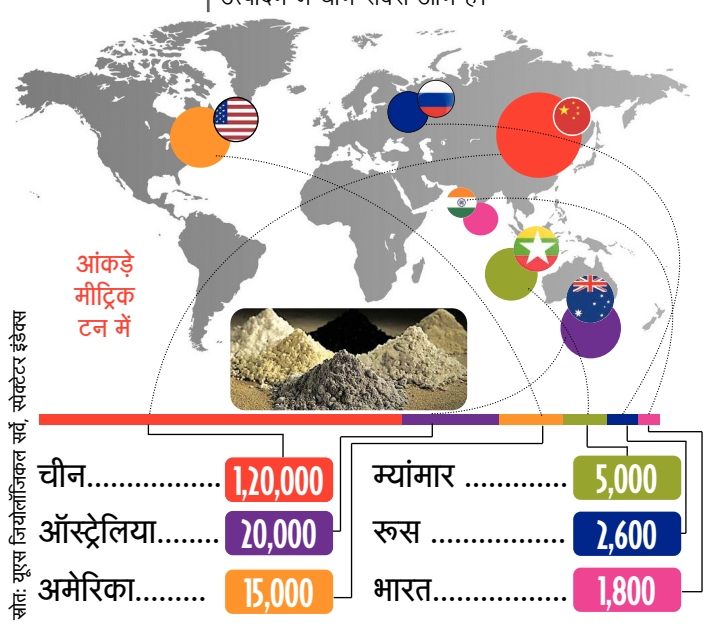

मां की निर्भीकता

सत्संग

रामकृष्ण परमहंस की स्त्री शारदा देवी उन दिनों जयरामबाटी स्थित अपने मायके में रह रही थीं। उनकी इच्छा हुई कि गांव से कोलकाता जाकर गंगा स्नान तथा पति के दर्शन किए जाएं। कुछ ग्रामीण गंगास्नान के लिए जा रहे थे। वह भी कुछ महिलाओं के साथ चल पड़ीं। रास्ते में तेलो-मेलो नामक स्थान पड़ता था। मां शारदा विश्राम के लिए एक वृक्ष के नीचे बैठी ही थीं कि डाकुओं ने उन्हें घेर लिया। एक ने कड़कती आवाज में कहा, तुम्हारे पास जो सामान हो, सामने रख दो। मां शारदा काली की परम भक्त थीं। भला वह क्यों भयभीत होतीं। उन्होंने हंसते हुए कहा, पिताजी, मैं जयरामबाटी के रामचंद्रजी की बेटी हूं। आपके जंवाई दक्षिणेश्वर के काली मंदिर के पुजारी हैं। उनके पास जा रही हूं। सरदार को पिताजी शब्द ने झकझोर डाला। वह उन्हें अपने घर पर ले गया और पत्नी से बोला, हमारी कोई संतान नहीं है। भगवान ने हमें यह सुंदर पुत्री दी है। कुछ देर आराम करने के बाद शारदा ने कहा, बाबा, यदि मैं कोलकाता नहीं पहुंची, तो आपके जंवाई चिंता में पड़ जाएंगे। मुझे जल्दी-से-जल्दी वहां पहुंचवा दीजिए। सरदार ने कहारों से पालकी मंगाई। हरे मटर, चिवड़ा व बताशे विदाई में दिए और स्वयं पालकी के साथ मंदिर तक पहुंचाने गया। इस घटना से सरदार का हृदय परिवर्तन हुआ। उसने डाका डालना छोड़ खेती करना शुरू कर दिया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

सुंदरन, भोले बच्चे और चप्पल

यह सुंदरन की कहानी है, जिसने भोले बच्चों की खुशियां लौटाईं।

सुंदरन दफ्तर से लौटा ही था कि पत्नी ने कहा, राशन खत्म हो गया है। सुंदरन का बाजार जाने का मन नहीं था, पर जाना जरूरी था। उसने गाड़ी निकाली और सुपर मार्केट की तरफ बढ़ा। आगे बढ़ते ही जाम दिखने लगा। अगले दिन त्योहार था। सुपर मार्केट में पहुंच सुंदरन ने सामान ट्रॉली में रखा और बिल की लाइन में खड़ा हो गया। लाइन लंबी थी। उसके आगे दो बच्चे थे। लड़के ने अपने से बड़ी साइज का पुराना कोट पहन रखा था और पैरों में पुरानी घिसी चप्पलें थीं। लड़की के बाल बिखरे हुए थे और उसके कपड़े भी उम्र के हिसाब से बड़े थे। लड़की के हाथ में सुनहरे रंग की चप्पल थी, जिसे उसने अपने सीने से लगा रखा था। उसके चेहरे पर बेशुमार खुशी झलक रही थी। लड़की ने चप्पल काउंटर पर बैठी महिला को दे दी। महिला ने उसे स्कैन किया और बोली, और कुछ? लड़के ने पूछा, कितना हुआ? महिला बोली, नौ सौ बीस रुपये। लड़के का चेहरा उतर गया। उसने बहन से कहा, अनु, चल घर चलें। हमारे पास सिर्फ पांच सौ रुपये ही हैं। अनु बोली, पर भैया, भगवान जी को यह चप्पल बहुत पसंद आएगी। भाई बोला, भगवान मन देखते हैं, चप्पल नहीं। सुंदरन सब सुन रहा था। उसने पांच सौ रुपये का नोट निकाला और धीरे से काउंटर पर रख दिया। यह देख लड़की खिलखिला उठी और सुंदरन से बोली, थैंक यू अंकल। सुंदरन ने लड़के से पूछा, अनु कह रही थी कि यह चप्पल भगवान जी को बहुत पसंद आएगी? ऐसा क्या है इस चप्पल में? लड़का बोला, हमारी मां अस्पताल में हैं। उन्हें कैंसर है और अब वह भगवान जी के पास जाने वाली हैं। पापा कहते हैं, स्वर्ग में सारी जमीन सोने की होती है। मां की चप्पल टूट गई है। इसीलिए अनु चाहती थी कि मां भगवान से मिलने सुनहरी चप्पल पहनकर जाएं।

जीवन के मायने समझने हों, तो आंसुओं को खुशी में बदलो।